Research Directions
Volume 1 , Issue 1 / July 2013 **ISSN:-2321-5488**

Research Article

प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ पत्रकारिता

एस. के. खोत
अध्यक्ष,हिंदी विभाग, चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी
ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापूर

सारांश

पत्रकारिता समाजसेवा का महत्त्वपूर्ण तथा सशक्त माध्यम है । पत्रकारिता को समाज के गतिविधियों का दर्पण कहा जाता है । आज के युग में पत्रकारिता का क्षेत्र सम्मानित तथा गौरवान्वित हुआ है । समाज की चिंता करनेवाली पत्रकारिता है । सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का अंकन कर उनकी समालोचना तथा उनके स्वरूप का चित्रण करना पत्रकारिता अपना धर्म मानती है । आज के युग में पूरी दुनिया भूमंडलीकरण के दौर से गुजर रही है । इसलिए आज पत्रकारिता एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता बन गई है ।

परिचयः

पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नलिज्म' (Journalism) शब्द का प्रयोग किया जाता है। जर्नालिज्म शब्द 'जर्नल' से बना है । जर्नल का शाब्दिक आषय है दैनिक विवरण । यह शब्द फ्रेंच भाषा के 'जर्नी' शब्द से निकला है । प्रारंभ में दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में होता था । पत्रकारिता मोटे तौर पर प्रतिदिन की घटनाओं का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करती है । ''पत्रकरिता वस्तुतः समाचारों के संकलन, चयन, विश्लेषण तथा संप्रेषण की प्रक्रिया है । पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है । इसका काम जनता एवं सत्ता के बीच एक संवाद–सेतु बनना भी है । इन अर्थो में पत्रकारिता के फलित एवं प्रभाव बहुत व्यापक है ।''[1]

पत्रकारिता एक ऐसी विद्या है, जिनमें लेखन और संपादन कार्य आते है, शीघ्र लेखन, आकर्षक पृष्ठों का बनाव, शीर्षक आकर्षक तथा संक्षेप में देना विज्ञापन देने की प्रवृत्ति, लेख तथा समाचार देना आदि सब पत्रकारिता के अंतर्गत आ जाता है । भारत की पत्रकारिता आधुनिक काल की देन है । आज की पत्रकारिता का स्वरूप व्यापक और बहुआयामी हो गया है । सूचनात्मक खुराक प्रदान करने का कार्य पत्रकार करता है । वह सदैव खबरों की खोज करता है । पत्रकार को सभी विषयों पर लिखना पडता है । पत्रकारिता खबरों को लोगों तक पहुँचाने का नाम है । पत्रकिारिता में समाज में ज्यों हुआ है, जों हो रहा है या होगा उसका भी चित्रण होता है । ''आधुनिक काल में पत्रकारिता, साहित्य के विभिन्न अंगों की भॉति स्वतंत्र विधा बन चुकी है । पत्रकारिता, मनुष्य और समाज, मजदूर और मालिक, शासक और षासित के बीच एक ऐसी कडी बन गई है, जो दोनों में सामंजस्य पैदा कर देती है । पत्रकारिता, साहित्य की विधा नहीं है, बल्कि साहित्य पत्रकारिता के विवचेन का साधन है । आज पत्रकारिता में कहानी साहित्य, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, फीचर आदि सभी शामिल है ।''[2]

छापखाने को जन्म मानव के लिए एक महत्त्वपूर्ण एवं अद्‌भूत घटना है । आज इसके माध्यम से दुनिया के कोने में समाचार पहुँचता है । छापखाना शुरू होने के पूर्व मनुश्य पारस्पारिक संवाद और खबरे जानना जरूरी रखता था । प्रारम्भिक काल में समाचार का प्रसार सुनी सुनाई बातों से होता था । बादशाह तथा सामंत के पहले काल में दूत थे । ये दूत सार्वजनिक स्थलों पर उनकी उद्‌घोषणाओं को समाज तक पहुँचते थे । इसके पूर्व मनुष्य, पशु–पक्षियों की आवाज निकालकर आवाज के माध्यम से अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने का कार्य करते थे । महाभारत का संजय समाचार वाचक था, जो युध्द का ऑखो देखा हाल विशद करता था । नारद ऋषि स्वर्ग और पृथ्वी दोनों लोकों में समाचार पहुँचाने का कार्य करते थे । नारद ऋषी थे, जिन्हें आधुनिक अर्थो में 'रिपोर्टर' कहा जाता है । वे वीणा के माध्यम से आगमन की सूचना देते थे । सरकार के कामकाज, कानून और नागरिकों के विरूध्द की गई कारवाई भी पहले काल में भारत वर्ष में खबरें बनती थी । आज भी ऐसा ही होता है । प्राचीन युग से आजतक नगाडे बजाकार शासन की नीतियों की घोषणा की जाती है । मंत्रियों के सूचना अधिकारी उन्हें समाज में घट रही घटनाओं से अवगत कराते थे । मंदिरों के शिला अभिलेखों द्वारा जानकारी प्रसारित की जाती है। ''यूरोप में भी समाचार मूल रूप से सुनी – सुनाई बातों पर ही आधारित था । राजा और मंत्रियों के अपने–अपने सूचना स्त्रोत थे । शहरों में स्थानीय हितों की खबरें उद्‌घोषित की जाती थी । राजाओं के दूत अथवा मंत्री एक दरबार से दूसरे राजदरबार का भ्रमण करते रहते थे एवं विभिन्न युध्दों में राजाओं के विजय–पराजय की खबरे एकत्रित करते थे । वे दरबारियों और सौदागरों हेतु उपयोगी सूचनाऍ एकत्रित करते थे एवं मजेदार बातों को जोडकर चटपटी खबरें भी तैयार कर लिया करते थे । इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे कभी–कभी आज के रिपोर्टरों के समान ही समाचारों को सनसनी खोज भी बना दिया करते थे ।''[3]

मनुष्य को जीवनयापन करने के लिए वायु, पानी और भोजन की आवश्यकता होती है , उसी तरह मनुष्य को पत्र–पत्रिकाओं की आवश्यकता पड रही है । नींद से जगाने के बाद देश विदेश में कौन सी घटना घटी है, यह पढना हर मनुष्य की जिज्ञासा होती है, वही पूरी करने का कार्य पत्रकारिता करती है । ''पत्रकारिता का क्षेत्र बेहद ही व्यापक है । इसके माध्यम से विज्ञान शिक्षा, साहित्य, कला राजनीति, जनकल्याण, धर्म–दर्शन, संस्कृत आदि क्षेत्रों की गतिविधियों का प्रसारण होता है । सांप्रदायिक सौहार्द व राष्ट्रीय एकता और समन्वय उनकी दिशा में पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।''[4]

पत्रकारिता में अच्छे कार्यो का गुणगान और बुराईयों की निंदा की जाती है । बुराईयों का सामना करने का भरसक कार्य पत्रकारिता करती है । सत्य, असत्य, सृजन, विनाश, उत्थान, पतन की स्थिति का जायजा पत्रकारिता लेती है । आजादी के पूर्व पत्रकारिता एक मिशन समझकर की जाती थी, किन्तु आज पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का प्रमुख व्यवसाय बन चुकी है । आज के युग में पत्रकारिता के अनेक माध्यम हो गये है, जैसे अखबार, पत्रिकाऍ, रेडियो, दूरदर्शन और वेब पत्रकारिता आदि । मानव सभ्यता के विकास में पत्रकारिता का बहुत बडा योगदान रहा है ।

पत्रकारिता को वर्तमान युग का पॉचवा वेद कहा जाता है और प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है । वस्तुतः पत्रकारिता को चोर नेत्र भी कहा जाता है । समाजजीवन को अभिव्यक्त करने का सफल कार्य पत्रकारिता है । समाज को जोडने के साथ – साथ मनोरंजन और मूल्यों में बढोत्तरी करने का कार्य पत्रकारिता करती करती है । ''पत्रकारिता अपने उद्देष के अनुरूप संघर्श करती हुई आगे बढती चली गई है । आजादी तक यह विशुध्द समाज और राष्ट्रसेवा से जुडी रही । आजादी के बाद धीरे–धीरे यह सेवा के साथ साथ व्यवसाय और पेशा के रूप में बदलती चली गई यह भटकाव कितना, किस रूप में और किस सीमा तक है, यह बहस का विषय है । इस बहस में जाना हमारा उद्देश नहीं है । इतनी बात तो स्पष्ट है कि इसका विस्तार हुआ है, इसके अनेक रूप हमारे सामने है ।''[5]

अंत में इतना ही कहना उचित होगा कि पत्रकारिता समाजसेवा का महत्त्वपूर्ण माध्यम है । मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का अंकन पत्रकारिता में होता है । स्पष्ट है कि पत्रकारिता के लिए कोई भी विषय वर्ज्य नहीं होता । आजादी के पूर्व पत्रकारिता मिशन समझकर की जाती थी आज इसमें निश्चित बदलाव देखने मिल रहा है यह सबसे दुख की तथा चिंता की बात है ।

संदर्भ सूची

1. समाचार लखेन और वेबपत्रकारिता, अपूर्व कुलश्रेष्ठ 'प्रसून', पृ. 25
2. पत्रकारिता और साहित्य, डॉ. शांति विश्वनाथन, पृ. 12
3. पत्रकारिता और समाज, डॉ. यू.सी. गुप्ता, पृ. 03
4. जनसंचार माध्यम एवं पत्रकारिता, प्रेमनाथ राय, पृ. 2
5. हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम, डॉ. जितेंद्र वत्स, पृ. 07